फ़र्क पडता हें

फ़र्क पडता हें
मोसम बदलता हें तो फ़र्क पडता हें
चिडियां चहकती हें तो फ़र्क पडता हें
बेटी गोद में आती हें तो फ़र्क पडता हें
भूख बढती हें आत्महत्यायें होती हें तो फ़र्क पडता हें
आदमी अकेले लडना तय करता हें तो फ़र्क पडता हें
आसमान में बादल छा जातें हें तो फ़र्क पडता हें
आंखे देखती हें कान सुनते हें तो फ़र्क पडता हें
यहां तक कि यह सोचने से भी फ़र्क पडता हें कि क्या फ़र्क पडता हें
जहां भी आदमी हें, हवा हें, रोशनी हें, आसमान हें,
अंधेरा हें, पहाड हें, नदियां हें, समुद्र हें, खेत हें,
पक्षी हें, लोग हें, आवाजें हें, नारे हें...
फ़र्क पडता हें
फ़र्क पडता हें इसलिए
फ़र्क लानेवालोंके साथ लोग खडे होते हें
ओर लोग कहने लगते हें की
"हां! फ़र्क पडता हें!"

– विष्णु नागर